विषयानुक्रमणिका

जैन आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चेतना

प्रथम परिवर्त- जैन आचार मीमांसा

क. श्रावकाचार - जैन जीवन पद्धति और पर्यावरण सन्तुलन (६), जैनाचारः पर्यावरण का मुख्य संरक्षक (१४), श्रावकाचारः पर्यावरण की आधार भूमि (१६), श्रावक परिभाषाः पर्यावरण का संरक्षक कौन?(१७) पाक्षिक श्रामक : पर्यावरण रक्षक का पहला कदम (२०), अस्तित्व और पर्यावरण (२१), अहिंसा और पर्यावरण (२३), अन्धविश्वास (२५), दैनिकचर्या (२६), अनेकान्तवाद और पर्यावरण (२७), मद्य मधु, मांसादि सप्तव्यसन और पर्यावरण (२८), नैष्ठिक श्रावक पर्यावरण संरक्षक का दूसरा कदम (४०), ग्यारह प्रतिमायें (४०), साधक श्रावक (६१), सल्लेखना (६१), गुणस्थानः अध्यात्मिक विकास के सोपान (६४), सामाजिक प्रदूषण और जैनधर्म (६४)।

२. श्रमणाचार - परिनिष्ठित आचार प्रक्रिया (७५), अट्ठाईस मूलगुण (७७), उत्तरगुण (८३), भिक्षु प्रतिमाएं (८७), श्रमणचर्या और पर्यावरण (८८), सामाचारिता (८९), मार्गणा और प्ररूपण (९०), चारित्र के भेद (९२), अचेलकत्व और सचेलकत्व (९२), श्रमण संघ के नियामक तत्त्व (९५), श्रमण दीक्षा (९६), श्रमण के उपकरण (९७), आहार (९९), विहार (९९), वर्षावास और व्यवहार (१००), साधना में उत्सर्ग और अपवाद मार्ग (१०१), साधना पद्धति (१०२), अचेलक्य (१०२),

द्वितीय परिवर्त - जैन तत्त्व मीमांसा

द्रव्य का स्वरूप और वर्गीकरण (१०५), परिणामीनित्यत्व (१०६), सदसत्कार्यवादित्व (१०७), द्रव्यः सामान्य और विशेष (१०८), उपादान और निमित्त (११०), जैनेतर दर्शनों में द्रव्य का स्वरूप (११३), पाश्चात्य दर्शनों में द्रव्य का स्वरूप (११६), द्रव्यभेद (११६) जीव अथवा आत्मा (११६), आत्मा और कर्म (११९), आत्मा का अस्तित्त्व (१२२), आत्मा की शक्ति (१२३), आत्मा और ज्ञान (१२३), जीव के पांच स्वतत्त्व (१२४), जैनेतर दर्शनों में आत्मा (१२७), पुद्गल (अजीव) (१२९), भौतिकवादी दर्शनों में पुद्गल(१३५), पुद्गल और आधुनिक विज्ञान (१३५), पाश्चात्य दर्शन में सृष्टिविचार (१३८), कर्मसिद्धान्त (१३८), कषाय और लेश्या (१४६), धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य (१४७), आकाश द्रव्य (१४८), कालद्रव्य (१४९), लोक का स्वरूप (१५१)।

तृतीय परिवर्त -जैन ज्ञान मीमांसा

क्षेत्र और स्वरूप (१५५), परीक्षावादी महावीर (१५५), रत्नत्रय : अपवर्ग-प्राप्ति का सोपान (१६२), ज्ञान अथवा प्रमाण का स्वरूप (१६४), सन्निकर्ष (१६६), प्रमाण और नय (१६८), प्रामाण्य विचार (१६९), प्रमाण संप्लव (१७०), धारावाहिक ज्ञान (१७०), मतिज्ञान और श्रुतज्ञान (१७१), अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान (१७३), केवलज्ञान और सर्वज्ञता (१७४), प्रमाण के भेद (१७७), प्रत्यक्ष प्रमाण (१७८), परोक्ष प्रमाण (१८०), प्रत्यभिज्ञान (१८१), तर्कप्रमाण (१८२), अनुमान प्रमाण (१८२), आगम प्रमाण (१८७), शब्द और अर्थ का सम्बन्ध (१८७), वेद और अपौरुषेयता (१८८), सन्निकर्ष (१८९), प्रमाण का फल (१९१), प्रमाणाभास (१९१), हेत्वाभास (१९१), दृष्टान्ताभास (१९२), वादकथा (१९२), अनेकान्तवाद (१९४), नयवाद (१९९), निक्षेप व्यवस्था (२०४), स्याद्वाद और सप्तभंगी (२०५), अमराविक्खेपवाद और स्याद्वाद (२११), अनेकान्तवाद और जैनेतर दार्शनिक (२१६), पाश्चात्यदर्शन और अनेकान्तवाद (२१८), मोक्ष(२२०),

चतुर्थ परिवर्त - भक्ति, ध्यानयोग एवं मन्त्र-तन्त्र परम्परा

जैनधर्म में भक्ति का स्वरूप (२२३), जिनपूजा : प्रकृति और स्वरूप (२९), उवसग्गहर स्तोत्र (२३१), भक्तामरस्तोत्र (२३३), मन्त्र परम्परा (२३७), तान्त्रिक विधि विधान (२७४), ध्यान : प्रकृति और स्वरूप (२७५), मन और योग(२७६), ध्यान और उसके भेद (२८२), योग (२८४), ध्यान और योग साधना (२८५), जैन योग का क्रमिक विकास (२८७), कुण्डलिनीजागरण तथा षट्चक्रभेदन (२९४), ध्यान और लब्धियां (२९७)।

पंचम परिवर्त- जैन धर्म एवं विज्ञान

दर्शन और विज्ञान (२९९), धर्म और विज्ञान (३००), तत्त्व का यथार्थ रूप (३०१) जीव (३०२), आधुनिक विज्ञान में जीव का अस्तित्व (३०२) आत्मवाद और पुनर्जन्मवाद (३०५), नियमवाद (३०७), ज्ञान (३०८), मतिज्ञान (३०८), अतीन्द्रियज्ञान (३१०), जैनधर्म और मनोविज्ञान (३१२), लेश्या (३१२), जीव वर्गीकरण (३१३), जीव वर्गीकरण और आधुनिक विज्ञान (३१४), वनस्पति कायिकी जीव (३१४), उपयोग (३२०), आयुगत आदि विशेषताएँ (३२१), त्रसकायिक जीव (३२२), अधर्म (३२२), आकाश (३२३), पुद्गल और परमाणु द्रव्य (३२४), स्कन्ध (३२६), वैज्ञानिक दृष्टिकोण (३२७), ईश्वर और कर्मवाद (३२८)।

षष्ठ परिवर्त - जैन धर्म और शाकाहार

आहार (३३०) आहार की आवश्यकता (३३०), आहार के भेद प्रभेद (३३१), आहार का काल (३३२), अभक्ष्य त्याग (३३३), पदार्थो की काल मर्यादा (३३४), दूध अभक्ष्य नही हैं

(३३४), कन्दमूल अभक्ष्य हैं (३३५), मांसाहार वर्ज्य है (३३५), आहार-शुद्धि (३३६), अम्ल तत्त्व की मीमांसा (३३७), संतुलित शाकाहारी भोजन (३३७), प्रकृति शाकाहारी है (३३८), शाकाहारी पौष्टिक है (३३९), जमीकन्दों के पोषक तत्त्व (३४०), मांसाहारः रोगों का घर (३४२), अण्डा शाकाहारी नहीं होता (३४३), आर्थिक दृष्टि से भी शाकाहार सही है (३४४), मांसनिर्यात कहाँ तक सही है? (३४५), मांसाहार : पर्यावरण-प्रदूषण (३४६), मांसाहार : भूकम्प का कारण (३४७), सौन्दर्य प्रसाधन (३४८), Items and their Brand Names(३५०), शाकाहार ही सर्वोत्तम आहार हैं (३५५)।

सप्तम परिवर्त - जैन तीर्थ परम्परा

उत्तर भारत (३६०), पूर्वभारत-विहार, बंगाल और उड़ीसा (३६४), मध्यभारत, मध्यप्रदेश, विदर्श और छत्तीसगढ़(३६७), पश्चिम भारत (३६९), दक्षिण भारत (३७४)

प्रमुख सन्दर्भ ग्रन्थ सूची - ३७९-३९१